


अब ऐसे लोका इन्हीं आने कुल करिगे ए'से इ'तमी इ'तल अलाय री'तय अ' विलल
मुहम्मद इ'त्यास अ'त्तार क'विरी २-ज'वी



अनमोल हरी

Anmol Heere (Hindi)

अनमोल हरी

- 
- ⊗ दिन का ए'लात 6
 - ⊗ ज'न्नत में भी अ'फ'स'स ! 8
 - ⊗ अनमोल ल'म्ह'ल की क'र 14
 - ⊗ स'य'द की फ'जी'लत 18
 - ⊗ सोने, जागने के 15 व' द'नी फूल 21
 - ⊗ य'क'त के क'र'द'र'नों के इ'र्शा'दात 14
 - ⊗ नि'ज'ामुल अ'व'क'लत की तर'की'ब बना ली'जिये 17

مکتبۃ الدین مکتبۃ اہل سنت والجماعت

मिसेक्ट्रेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com, www.dawateislami.net

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَسَلَامٌ
 أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अनमोल हीरे¹

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (24 स-फ़हात) आप
 आख़िर तक ज़रूर पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ दुनिया व आख़िरत
 के बे शुमार मनाफ़ेअ़ हासिल होंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम

अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़तावा र-जिविय्या शरीफ़ जिल्द 23

सफ़हा 122 पर नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते अबुल मवाहिब عَنْهُ اللَّهُ تَعَالَى

फ़रमाते थे कि मैं ने ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को

देखा, हुजूरे अक्दस صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ से फ़रमाया कि “क़ियामत

के दिन तुम एक लाख बन्दों की शफ़अत करोगे ।” मैं ने अर्ज़ की : “या

रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं कैसे इस काबिल हुवा ?” इर्शाद

फ़रमाया : “इस लिये कि तुम मुझ पर दुरूद पढ़ कर इस का सवाब मुझे नज़

1 येह बयान अमीरे अहले सुन्नत عَلَيْهِ السَّلَام ने दामत بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर
 सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (25 स-फ़रुल मुजफ़फ़र
 सि. 1430 हि./2009) में सह्राए मदीना बाबुल मदीना कराची में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम
 के साथ तहरीरन हाज़िरे ख़िदमत है ।”
 मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

करते हो।” सवाब नज़्र करने का तरीका यह है कि पढ़ते वक़्त सवाब नज़्र करने की दिल में निय्यत कर ले या पढ़ने से क़ब्ल या बा’द ज़बान से भी कह ले कि इस **दुरूद शरीफ़** का सवाब जनाबे रिसालत मआब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** मआब की नज़्र करता हूँ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

कहते हैं, एक **बादशाह** अपने मुसाहिबों के साथ किसी बाग़ के क़रीब से गुज़र रहा था कि उस ने देखा बाग़ में से कोई शख़्स संगरेजे (या’नी छोटे छोटे पत्थर) फेंक रहा है, एक संगरेजा खुद इस को भी आ कर लगा। उस ने खुदाम को दौड़ाया कि जा कर संगरेजे फेंकने वाले को पकड़ कर मेरे पास हाज़िर करो, चुनान्चे खुदाम ने एक गंवार को हाज़िर कर दिया। **बादशाह** ने कहा : यह संगरेजे तुम ने कहां से हासिल किये ? उस ने डरते डरते कहा : मैं वीराने में सैर कर रहा था कि मेरी नज़र इन ख़ूब सूरत संगरेजों पर पड़ी, मैं ने इन को झोली में भर लिया, इस के बा’द फिरता फिरता इस बाग़ में आ निकला और फल तोड़ने के लिये यह संगरेजे इस्ति’माल कर लिये। **बादशाह** ने कहा : तुम इन संगरेजों की क़ीमत जानते हो ? उस ने अर्ज़ की : नहीं। **बादशाह** बोला : यह पत्थर के टुकड़े दर अस्ल **अनमोल**

हीरे थे, जिन्हें तुम नादानी के सबब जाएअ कर चुके। इस पर वोह शख्स अफ़सोस करने लगा। मगर अब उस का अफ़सोस करना बेकार था कि वोह अनमोल हीरे उस के हाथ से निकल चुके थे।

जिन्दगी के लम्हात अनमोल हीरे हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी तरह हमारी जिन्दगी के लम्हात भी अनमोल हीरे हैं अगर इन को हम ने बेकार जाएअ कर दिया तो हसरत व नदामत के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

दिन भर खेलों में खाक उड़ाई लाज आई न ज़रों की हंसी से
 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को एक मुक़र्रर वक़्त के लिये खास मक़सद के तहत इस दुन्या में भेजा है। चुनान्वे पारह 18 सू-रतुल मुअमिनून आयत नम्बर 115 में इर्शाद होता है :

فَصَبِّئْهُمُ إِنَّمَا خَلَقْتُمْ عَبِيدًا तर-ज-माए कन्जुल ईमान : तो क्या येह
 وَأَنْتُمْ إِلَيْنَا لَتَرْجَعُونَ ⑩ समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और
 तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना नहीं।

“ख़ज़ाइनुल इरफ़ान” में इस आयते मुक़द्दसा के तहत लिखा है : और (क्या तुम्हें) आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं बल्कि तुम्हें इबादत के लिये पैदा किया कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम

हमारी तरफ़ लौट कर आओ तो तुम्हे तुम्हारे आ'माल की जज़ा दें।

मौत व हयात की पैदाइश का सबब बयान करते हुअे पारह 29

सू-रतुल मुल्क आयत नम्बर 2 में इर्शाद होता है :

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ

لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह जिस ने
मौत और जिन्दगी पैदा की के तुम्हारी जांच हो
तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है।

जिन्दगी का वक़्त थोड़ा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़कूरा दो² आयात के इलावा भी कुरआने पाक में दीगर मक़ामात पर तख़लीके इन्सानी या'नी इन्सान की पैदाइश का मक्सद बयान किया गया है। इन्सान को इस दुन्या में बहुत मुख़्तसर से वक़्त के लिये रहना है और इस वक़्फ़े में इसे क़ब्रो हशर के तवील तरीन मुअ़ा-मलात के लिये तय्यारी करनी है लिहाज़ा इन्सान का वक़्त बेहद कीमती है। वक़्त एक तेज़ रफ़्तार गाड़ी की तरह फ़रटि भरता हुवा जा रहा है न रोके रुकता है न पकड़ने से हाथ आता है, जो सांस एक बार ले लिया वोह पलट कर नहीं आता। चुनान्चे

सांस की माला

हज़रते सय्यिदुना हसने बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فرमाते हैं :

जल्दी करो ! जल्दी करो ! तुम्हारी जिन्दगी क्या है ? येही सांस तो हैं कि अगर रुक जाएं तो तुम्हारे उन आ'माल का सिल्लिसला भी मुन्क़तेअ़ हो जाए जिन से तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल करते हो । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख्स पर रहम फ़रमाए जिस ने अपना जाएजा लिया और अपने गुनाहों पर चन्द आंसू बहाए । येह कहने के बा'द आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पारह 16 सूराए मरयम की आयत नम्बर 84 तिलावत फ़रमाई : **إِنَّمَا تَعَدُّ لَهُمْ عَذَابٌ** तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और हम तो इन की गिनती पूरी करते हैं । हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** फ़रमाते हैं : यहां गिनती से सांसों की गिनती मुराद है ।

(एहयाउल इलूम, जि. 4, स. 205, दारे सादिर बैरूत)

येह सांस की माला अब बस टूटने वाली है

ग़फ़लत से मगर दिल क्यूं बेदार नहीं होता

“दिन” का ए'लान

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहकी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** “शु-अबुल ईमान”

में नक्ल करते हैं : ताजदारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने इब्रत निशान है : रोज़ाना सुब्ह जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उस वक़्त “दिन” येह ए'लान करता है : अगर आज कोई अच्छा काम करना है तो कर लो कि

आज के बा'द मैं कभी पलट कर नहीं आऊंगा ।

(शु-अबुल ईमान, जि. 3, स. 386, हदीस : 3840, दारुल कुतुबुल इल्मिया बैरूत)

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं

जनाब या मर्हूम !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का जो दिन नसीब हो गया उसी को ग़नीमत जान कर जितना हो सके उस में अच्छे अच्छे काम कर लिये जाएं तो बेहतर है कि “कल” न जाने हमें लोग “जनाब” कह कर पुकारते हैं या “मर्हूम” कह कर । हमें इस बात का एहसास हो या न हो मगर येह हकीकत है कि हम अपनी मौत की मन्ज़िल की तरफ़ निहायत तेज़ी के साथ रवां दवां हैं । चुनान्चे पारह 30 सूराए इन्शिकाक़ की आयत नम्बर 6 में इर्शाद होता है :

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ
إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًّا حَافِلْتَقِيهِ ۝

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ आदमी !
बेशक तुझे अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की तरफ़
ज़रूर दौड़ना है फिर उस से मिलना ।

मरते जाते हैं हज़ारों आदमी

आक़िलो नादान आख़िर मौत है

अचानक मौत आ जाती है

अपने वक्त को फुजूलियात में बरबाद करने वालो ! गौर करो ज़िन्दगी किस क़दर तेज़ रफ़्तारी के साथ गुज़रती जा रही है। बारहा आप ने देखा होगा कि अच्छा भला डेलडोल वाला इन्सान अचानक मौत के घाट उतर जाता है, अब क़ब्र में उस पर क्या बीत रही है इस का अन्दाज़ा हम नहीं कर सकते अलबत्ता खुद उस पर ज़िन्दगी का हाल खुल चुका होगा कि :

कितनी बे ए'तिबार है दुनिया

मौत का इन्तिज़ार है दुनिया

गर्चे ज़ाहिर में सूरते गुल है

पर हक़ीक़त में ख़ार है दुनिया

ऐ दुनिया के माल के मतवालो ! जम्पू माल ही को अपनी ज़िन्दगी का मक्सदे वहीद समझने वालो ! जल्दी जल्दी अपनी आख़िरत की तय्यारी कर लो। कहीं ऐसा न हो कि रात भले चंगे सोने के बा वुजूद सुब्ह तुम्हें अंधेरी क़ब्र में डाल दिया जाए। **लिल्लाह !** ग़फ़लत की नींद से बेदार हो जाओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 17 सू-रतुल अम्बियाअ की पहली आयत में इर्शाद फ़रमाता है :

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَ

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : लोगों का

हिसाब नज़्दीक और वोह ग़फ़लत में मुंह

هُمُ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ۝

फेरे हैं।

एक झौंके में है इधर से उधर
चार^४ दिन की बहार है दुन्या
जन्नत में भी अफ़सोस !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें अपने वक़्त की क़द्र पेहचाननी ज़रूरी है, फ़ालतू वक़्त गुज़रना कितने बड़े नुक़सान की बात है वोह इस हदीसे मुबारक से समझिये चुनान्चे ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा क़रीना है : “अहले जन्नत को किसी चीज़ का भी अफ़सोस नहीं होगा सिवाए उस साअत (या'नी घड़ी) के जो (दुन्या में) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक़्र के बिग़ैर गुज़र गई ।” (अल मो'जमुल कबीर, जि. 20, स. 93,94, हदीस : 172, दारो एहयाउत्तुरासिल अ-रबी बैरूत)

क़लम का क़त

हाफ़िज़ इब्ने असाकिर “तब्यीनु कज़िबिल मुफ़्तरी” में फ़रमाते हैं : (पांचवीं सदी के मशहूर बुजुर्ग) हज़रते सय्यिदुना सलीम राजी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का क़लम जब लिखते लिखते घिस जाता तो क़त लगाते (या'नी नोक तराशते) हुए (अगर्चे दीनी तहरीर के लिये येह भी सवाब का काम है मगर एक पन्थ दो काज के मिस्दाक़) ज़िक़्रुल्लाह शुरूअ कर देते ताकि येह वक़्त सिर्फ़ क़त लगाते हुए ही सर्फ़ न हो !

जन्नत में दरख्त लगवाइये !

वक्त की अहम्मियत का इस बात से अन्दाज़ा लगाइये कि अगर आप चाहें तो इस दुनिया में रहते हुए सिर्फ़ एक सेकन्ड में जन्नत के अन्दर एक दरख्त लगवा सकते हैं और जन्नत में दरख्त लगवाने का तरीका भी निहायत ही आसान है चुनान्चे “इब्ने माजह शरीफ़” की एक हदीसे पाक के मुताबिक़ इन चारों कलिमात में से जो भी कलिमा कहें जन्नत में एक दरख्त लगा दिया जाएगा। वोह कलिमात येह हैं :

(1) اللَّهُ أَكْبَرُ (2) لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ (3) أَلْحَمْدُ لِلَّهِ (4) سُبْحَانَ اللَّهِ

(सु-न्ने इब्ने माजह, जि. 4, स. 252, हदीस : 3807, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जन्नत में दरख्त लगवाना किस क़दर आसान है ! अगर बयान कर्दा चारों कलिमात में से एक कलिमा कहें तो एक और अगर चारों कह लेंगे तो जन्नत में चार दरख्त लग जाएंगे। अब आप ही गौर फ़रमाइये कि वक्त कितना कीमती है कि ज़बान को मा'मूली सी ह-र-कत देने से जन्नत में दरख्त लग जाते हैं तो ऐ काश ! फ़लतू बातों की जगह اللَّهُ سُبْحَانَ اللَّهِ سُبْحَانَ اللَّهِ का विर्द कर के हम जन्नत में बे शुमार दरख्त लगवा लिया करें। हम चाहे खड़े हों, चल रहे हों, बैठे हों या लैटे हों या

कोई काम काज कर रहे हों हमारी कोशिश येही होनी चाहिये कि हम दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें कि इस के सवाब की कोई इन्तिहा नहीं सरकारे नामदार

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فَرَمَاتے हैं : जिस ने मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ा

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ उस पर दस¹⁰ रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, दस¹⁰ गुनाह मिटाता है, दस¹⁰ द-रजात बुलन्द फ़रमाता है ।

(सु-ननुनसाई, स. 222 हदीस : 1294, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत)

صَلُّوا عَلَى الْخَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

याद रहे ! जब भी लैटे लैटे कोई विर्द करें तो पाउं समेट लेना चाहिये ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! बोलने से पहले इस तरह तोलने की आदत पड़ जाए कि येह बात जो मैं करना चाहता हूं इस में कोई दीनी या दुन्यवी फ़ाएदा भी है या नहीं ? अगर येह बात फुज़ूल महसूस हो तो बोलने के बजाए “दुरूद शरीफ़” पढ़ना या “अल्लाह अल्लाह” कहना नसीब हो जाए ताकि ढेरों सवाब हाथ आए । या سُبْحَانَ اللهِ या اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ या لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ या اللهُ اللهُ कह कर जन्नत में दरख़्त लगवाने की सआदत मिल जाया करे ।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे

मेरी फुज़ूल गोई की आदत निकाल दो

साठ साल की इबादत से बेहतर

अगर कुछ पढ़ने के बजाए खामोश रहने को जी चाहे तो इस में भी सवाब कमाने की सूरतें हैं और वोह येह कि उलटे सीधे खयालात में पढ़ने के बजाए आदमी यादे खुदा वन्दी **عَزَّوَجَلَّ** या यादे मदीना व शाहे मदीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** में गुम हो जाए । या इल्मे दीन में गौरो **तफ़क्कुर** शुरूअ कर दे या मौत के झटकों, क़ब्र की तन्हाइयों, इस की वहूशतों और महशर की होलनाकियों की सोच में डूब जाए तो इस तरह भी वक़्त जाएअ नहीं होगा बल्कि एक एक सांस **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इबादत में शुमार होगा । चुनान्वे “जामेए सगीर” में है : **सरकारे मदीना**, राहते क़ल्बो सीना, बाइसे नुजूले सकीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बा करीना है : (उमूरे आख़िरत के **मु-तअल्लिक़**) घड़ी भर के लिये **गौरो फ़िक़र** करना **60** साल की इबादत से बेहतर है । (अल जामिउस्सगीर

लिस्सुयूती, स. 365, हदीस : 5897, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत)

उन की यादों में खो जाइये

मुस्तफ़ा मुस्तफ़ा कीजिये

पांच⁵ को पांच⁵ से पहले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन ज़िन्दगी बेहद मुख़्तसर है, जो वक़्त मिल गया सो मिल गया, आइन्दा वक़्त मिलने की उम्मीद धोका है । क्या मा'लूम आइन्दा लम्हे हम मौत से हम आगोश हो चुके हों । रहमते

आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं :

اِعْتَنِمُ خَمْسًا قَبْلَ خَمْسٍ
شَبَابَكَ قَبْلَ هَرَمِكَ وَصِحَّتَكَ
قَبْلَ سَقَمِكَ وَغِنَاكَ قَبْلَ فَقْرِكَ
وَفَرَاغَكَ قَبْلَ شُغْلِكَ وَحَيَاتَكَ
قَبْلَ مَوْتِكَ

तरजमा : पांच चीजों को पांच चीजों से पहले ग़नीमत जानो (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सिद्दहत को बीमारी से पहले (3) मालदारी को तंगदस्ती से पहले (4) फुरसत को मशगूलियत से पहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले ।

(अल मुस्तदरक, जि. 5, स. 435, हदीस :

7916, दारुल मा'रिफ़ह बैरूत)

ग़ाफ़िल तुझे घड़ियाल येह देता है मुनादी
कुदरत ने घड़ी उम्र की इक और घटा दी
दो ने 'मतें

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशदि फैज़ बुन्याद है : दो² ने'मतें ऐसी हैं जिन के बारे में बहुत से लोग धोके में हैं, एक सिद्दहत और दूसरी फ़राग़त । (सहीहुल बुख़ारी, जि. 4, स.

222, हदीस : 6412, दारुल कुतुबुल इल्मिया बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकेई सिद्दहत की क़दर बीमार

ही कर सकता है और वक्त की क़दर वोह लोग जानते हैं जो बेहद मस्रूफ़ होते हैं वरना जो लोग “फ़ुरसती” होते हैं उन को क्या मा'लूम कि वक्त की क्या अहम्मियत है ! वक्त की क़दर पैदा कीजिये और फुज़ूल बातों, फुज़ूल कामों, फुज़ूल दोस्तियों से गुरेज़ करने का ज़ेहन बनाइये ।

हुस्ने इस्लाम

तिरमिज़ी शरीफ़ में है : सरकारे दो² आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोहूतशाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : इन्सान के इस्लाम की ख़ूबियों में से एक (ख़ूबी) छोड़ देना है उस (अम्र) का जो इसे नफ़अ न दे ।

(सु-ननुत्तिरमिज़ी, जि. 4, स. 142, हदीस : 2344, दारुल फ़िक्क बैरूत)

अनमोल लम्हात की क़द्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी के अय्याम चन्द घन्टों से और घन्टे लम्हों से इबारत हैं, ज़िन्दगी का हर सांस अनमोल हीरा है, काश ! एक एक सांस की क़दर नसीब हो जाए कि कहीं कोई सांस बे फ़ाएदा न गुज़र जाए और कल बरोज़े क़ियामत ज़िन्दगी का ख़ज़ाना नेकियों से ख़ाली पा कर अशके नदामत न बहाने पड़ जाएं ! सद करोड़ काश ! एक एक लम्हे का हिसाब करने की आदत पड़ जाए कि कहां बसर हो रहा है, ज़हे मुक़द्दर !

जिन्दगी की हर हर साअत मुफ़ीद कामों ही में सर्फ़ हो। बरोजे कियामत अवकात को फुज़ूल बातों, खुश गप्पियों में गुज़रा हुवा पा कर कहीं कफ़े अफ़सोस मलते न रह जाएं।

वक्त के क़द्रदानों के इर्शादात व मन्कूलात

- (1) अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा وَجْهَهُ الْكَرِيمِ اللهُ تَعَالَى كَرَّمَ فَرमाते हैं : “येह अय्याम तुम्हारी जिन्दगी के स-फ़हात हैं इन को अच्छे आ'माल से ज़ीनत बख़्शो।”
- (2) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं अपनी जिन्दगी के गुज़रे हुए उस दिन के मुक़ाबले में किसी चीज़ पर नादिम नहीं होता जो दिन मेरा नेक आ'माल में इज़ाफ़े से ख़ाली हो।”
- (3) हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : रोज़ाना तुम्हारी उम्र मुसल्सल कम होती जा रही है तो फिर नेकियों में क्यूं सुस्ती करते हो ? एक मर्तबा किसी ने अर्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन “येह काम आप कल पर मुअख़्ख़र कर दीजिये।” इर्शाद फ़रमाया : “मैं रोज़ाना का काम एक दिन में ब मुशिकल मुकम्मल कर पाता हूं अगर आज का काम भी कल पर छोड़

दूंगा तो फिर दो दिन का काम एक दिन में क्योंकर कर सकूंगा ?”

आज का काम कल पर मत डालो कल दूसरा काम होगा

- (4) हज़रते सय्यिदुना हसने बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فَرَمَاتे हैं । ऐ आदमी ! तू अय्याम ही का मज्मूआ है, जब एक रोज़ गुज़र जाए तो यूँ समझ कि तेरी ज़िन्दगी का एक हिस्सा भी गुज़र गया ।

(अचक्कातुल कुब्रा लिल मनावी, जि. 6, स. 259, दारे सादिर बैरूत)

- (5) हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ فَرَمَاتे हैं : मैं एक मुद्दत तक अहलुल्लाह की सोहबत से फ़ैज़याब रहा उन की सोहबत से मुझे दो अहम्म बातें सीखने को मिलीं । (1) वक़्त तलवार की तरह है तुम इस को (नेक आ'माल के ज़रीए) काटो वरना (फुज़ूलियात में मशगूल कर के) येह तुम को काट देगा (2) अपने नफ़्स की हिफ़ज़त करो अगर तुम ने इस को अच्छे काम में मशगूल न रखा तो येह तुम को किसी बुरे काम में मशगूल कर देगा ।

- (6) इमाम राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ فَرَمَاتे हैं : “खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! खाना खाते वक़्त इल्मी मशग़ला (तहरीरी या मुता-लआ) तर्क हो जाने का मुझे बहुत अफ़सोस होता है कि वक़्त निहायत ही कीमती दौलत है ।” अज़ब चीज़ एहसास है ज़िन्दगी का

(7) आठवीं सदी के मशहूर शाफ़ेई अ़लिम सय्यिदुना शम्सुद्दीन अस्बहानी *قدس سره الورانی* के बारे में हाफ़िज़ इब्ने हजर *رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ* फ़रमाते हैं : आप *رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ* इस ख़ौफ़ से खाना कम तनावुल फ़रमाते थे कि ज़ियादा खाने से बौल व बराज़ की ज़रूरत बढ़ेगी और बार बार बैतुल ख़ला जा कर वक़्त सर्फ़ होगा ! (अहु-ररुल कामिनह लिल अस्क़लानी, जि. 4,

स. 328, दारो एहयाउत्तुरासिल अ-रबी बैरूत)

(8) हज़रते अ़ल्लामा ज़हबी *رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ* “तज़िकरतुल हुप्फ़ाज़” में ख़तीबे बग़दादी *رحمة الله الهادي عليه* के बारे में तहरीर फ़रमाते हैं : “आप राह चलते भी मुता-लआ जारी रखते ।” (ताकि आने जाने का वक़्त बेकार न गुज़रे)

(तज़िकरतुल हुप्फ़ाज़, जि. 3, स. 224, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत)

(9) हज़रते जुनैद बग़दादी *رحمة الله الهادي عليه* वक़्ते नज़अ कुरआने पाक पढ़ रहे थे, उन से इस्तिफ़सार किया गया : इस वक़्त मे भी तिलावत ? इर्शाद फ़रमाया : मेरा नामए आ'माल लपेटा जा रहा है तो जल्दी जल्दी इस में इज़ाफ़ा कर रहा हूँ । (सीदुल ख़ातिर लि इन्नुल

जूज़ी, स. 227, मक-त-बए नज़ज़ार मुस्तफ़ा अल बाज़)

निज़ामुल अवकात की तरकीब बना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो अपना यौमिया निज़ामुल अवकात तरतीब दे लेना चाहिये । अब्बलन इशा की नमाज़ पढ़ कर हत्तल इम्कान दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये । रात को फुज़ूल चौपाल लगाना, होटलों की रौनक बढ़ाना और दोस्तों की मजलिसों में वक्त गंवाना (जब कि कोई दीनी मस्लिहत न हो) बहुत बड़ा नुक़सान है । तफ़्सीरे रूहुल बयान जिल्द 4 सफ़हा नम्बर 166 पर है : “क़ौमे लूत की तबाह कारियों में से येह भी था कि वोह चौराहों पर बैठ कर लोगों से ठड्डा मस्ख़री करते थे ।” प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े खुदा वन्दी से लरज़ उठिये ! दोस्त ब जाहिर कैसे ही नेक सूरत हों इन की दिल आज़ार और खुदाए ग़फ़ार عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल कर देने वाली महफ़िलों से तौबा कर लीजिये । रात को दीनी मशाग़िल से फ़ारिग़ हो कर जल्द सो जाइये कि रात का आराम दिन के आराम के मुक़ाबले में ज़ियादा सिहहत बख़्श है और ऐन फ़ितरत का तकाज़ा भी । चुनान्चे पारह 20 सू-रतुल क़सस आयत नम्बर 73 में इर्शाद होता है :

وَمِنْ رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ

النَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا

مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٤٧﴾

तर-ज-मए कञ्जुल ईमान : और
उस ने अपनी मेहर (रहमत) से तुम्हारे
लिये रात और दिन बनाए कि रात में
आराम करो और दिन में उस का फ़ज़ल
ढूँडो (या'नी कस्बे मआश करो) और
इस लिये कि तुम हक़ मानो ।

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार
खान नूरुल इरफ़ान“ सफ़हा 629 पर इस के तहत
फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि कमाई के लिये दिन और आराम के
लिये रात मुक़रर करनी बेहतर है । रात को बिला वजह न जागे, दिन में
बेकार न रहे अगर मा'जूरी (मजबूरी) की वजह से दिन में सोए और रात
को कमाए तो हरज नहीं जैसे रात की नोकरियों वाले मुलाज़िम वगैरा ।

सुब्ह की फ़ज़ीलत

निज़ामुल अवक़ात मु-तअय्यन करते हुए काम की नौइय्यत
और कैफ़ियत को पेशे नज़र रखना मुनासिब है । म-सलन जो इस्लामी
भाई रात को जल्दी सो जाते हैं सुब्ह के वक़्त वोह तरो ताज़ा होते हैं ।
लिहाज़ा इल्मी मशाग़िल के लिये सुब्ह का वक़्त बहुत मुनासिब है ।

सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की येह दुआ “तिरमिजी” ने नक्ल की है : “ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी उम्मत के लिये सुब्ह के अवकात में ब-र-कत अता फ़रमा ।” (तिरमिजी, जि. 3, स. 6, हदीस : 1216) चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मफ़ती अहमद यार ख़ान عَزَّوَجَلَّ इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : या'नी (या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ !) मेरी उम्मत के तमाम उन दीनी व दुन्यावी कामों में ब-र-कत दे जो वोह सुब्ह सवेरे किया करें । जैसे सफ़र, त़लबे इल्म, तिजारत वग़ैरा ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 491)

कोशिश कीजिये कि सुब्ह उठने के बा'द से ले कर रात सोने तक सारे कामों के अवकात मुक़रर हों म-सलन इतने बजे तहज्जुद, इल्मी मशाग़िल, मस्जिद में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत नमाज़े फ़ज़्र (इसी तरह दीगर नमाज़ें भी) इशराक़, चाशत, नाशता, कस्बे मआश, दो पहर का खाना, घरेलू मुआ-मलात, शाम के मशाग़िल, अच्छी सोहबत, (अगर येह मुयस्सर न हो तो तन्हाई ब दरजहा बेहतर है), इस्लामी भाइयों से दीनी ज़रूरियात के तहूत मुलाक़ात, वग़ैरा के अवकात मु-तअय्यन कर लिये जाएं, जो इस के आदी नहीं हैं उन के

लिये हो सकता है शुरू में कुछ दुश्चारी पेश आए। फिर जब आदत पड़ जाएगी तो इस की ब-र-कतें भी खुद ही जाहिर हो जाएंगी। **ان شاء الله عزوجل**।

दिल लहव में खोना तुझे शब सुबह तक सोना तुझे शर्म नबी खौफ़े खुदा **عزوجل** येह भी नहीं वोह भी नहीं रिज़के खुदा **عزوجل** खाया किया फ़रमाने हक़ **عزوجل** टाला किया शुक्रे करम तरसे जज़ा येह भी नहीं वोह भी नहीं

(हदाइके बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़िताम की तरफ़ लाते हुए सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़मे हिदायत, नौशाए बज़मे जन्नत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्वत की उस ने मुझ से महब्वत की और जिस ने मुझ से महब्वत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (मिशक़ातुल

मसाबीह, जि. 1, स. 55, हदीस : 175, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत)

सुन्नतें आम करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“काश ! जन्नतुल बक़ीअ मिले” के पन्दरह हुरूफ़ की
निस्बत से सोने, जागने के 15 म-दनी फूल

(1) सोने से पहले बिस्तर को अच्छी तरह झाड़ लीजिये ताकि कोई मूज़ी कीड़ा वगैरा हो तो निकल जाए (2) सोने से पहले येह दुआ पढ़ लीजिये : اللَّهُمَّ بِأَسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيُ तरजमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) (बुख़ारी, जि. 4, स. 196, हदीस : 6325) (3) अस् के बा'द न सोएं अक्ल जाइल होने का ख़ौफ़ है । फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जो शख्स अस् के बा'द सोए और उस की अक्ल जाती रहे तो वोह अपने ही को मलामत करे ।” (मुस्नदो अबी या'ला, हदीस : 4897, जि. 4, स. 278) (4) दो पहर को कैलूला (या'नी कुछ देर लैटना) मुस्तहब है । (आलमगीरी, जि. 5, स. 376) सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह उन लोगों के लिये होगा जो शब बेदारी करते हैं, रात में नमाज़ें पढ़ते जिक्रे

इलाही **عَزَّوَجَلَّ** करते हैं या कुतुब बीनी या मुता-लए में मशगूल रहते हैं कि शब बेदारी में जो थकान हुई कैलूला से दफ़्अ हो जाएगी। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 16, स. 79, मक-त-बतुल मदीना) (5) दिन के इब्तिदाई हिस्से में सोना या मग़ि़रब व इशा के दरमियान में सोना मक्रूह है। (आलमगीरी, जि. 5, स. 376) (6) सोने में मुस्तहब यह है कि बा तहारत सोए और (7) कुछ देर सीधी करवट पर सीधे हाथ को रुख़्सार (या'नी गाल) के नीचे रख कर किब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाई करवट पर (ऐज़न) (8) सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहां तन्हा सोना होगा सिवा अपने आ'माल के कोई साथ न होगा (9) सोते वक़्त यादे खुदा **عَزَّوَجَلَّ** में मशगूल हो तहलील व तस्बीह व तहमीद पढ़े (या'नी **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ سُبْحَانَ اللَّهِ** और **الْحَمْدُ لِلَّهِ** का विर्द करता रहे) यहां तक कि सो जाए, कि जिस हालत पर सोता है उसी पर उठता है और जिस हालत पर मरता है क़ियामत के दिन उसी पर उठेगा (ऐज़न) (10) जागने के बा'द यह दुआ पढ़िये : **”الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ”** (बुख़ारी, जि. 4, स. 196, हदीस : 6325) तरजमा : तमाम ता'रीफ़े **اللّهُ** के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है (11) उसी वक़्त इस का पक्का इरादा करे कि परहेज़ ग़ारी व तक्वा करेगा

किसी को सताएगा नहीं। (फ़तावा आलमगीरी, जि. 5, स. 376) **(12)** जब लड़के और लड़की की उम्र दस¹⁰ साल की हो जाए तो उन को अलग अलग सुलाना चाहिये बल्कि इस उम्र का लड़का इतने बड़े (या'नी अपनी उम्र के) लड़कों या (अपने से बड़े) मर्दों के साथ भी न सोए (दुर्रै मुख्तार, रहुल मुहतार, जि. 9, स. 629) **(13)** मियां बीवी जब एक चारपाई पर सोएं तो दस बरस के बच्चे को अपने साथ न सुलाएं, लड़का जब हद्दे शहवत को पहुंच जाए तो वोह मर्द के हुक्म में है (दुर्रै मुख्तार, जि. 9, स. 630) **(14)** नींद से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये **(15)** रात में नींद से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये तो बड़ी सआदत है। सधियदुल मुबल्लिगीन, रहूमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “फ़र्जों के बा'द अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।” (सहीह मुस्लिम, स. 591, हदीस : 1163)

तरह तरह की सेंकड़ों सुन्नतें सीखने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 120 स-फ़हात की किताब “सुन्नतें और आदाब” हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल के

साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रहमतें क़ाफ़िले में चलो

होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, ए'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा 'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में वक्फ़ा वक्फ़ा से बदल बदल कर सुन्नतों भरे रसाइल पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ